भारतीय ज्ञान परंपरा

संस्कृति, दर्शन, शैक्षिक विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान परंपरा :
संस्कृति, दर्शन, शिक्षा विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :

डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

Ph.D., D.Lit. (Sub.)

निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

प्रकाशक :
छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001
मो. 9660111549

संस्करण :
प्रथम 2022-2023

ISBN : 978 - 81 - 89435 - 64 - 6

मूल्य - 300/-

रचना - भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

13. नजीर अकबराबादी और हिन्दू धर्म : एक समन्वायात्मक दृष्टि

डॉ. कल्पना महावर
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

नजीर अकबरबादी 18वी सदी और 19वीं सदी के पूर्वार्ध के सामाजिक, धार्मिक जीवन के प्रत्यक्ष दृष्टा थे। नजीर अपने माता–पिता की इकलौती सन्तान थे। पत्नी तहव्वरुन्निसा बेगम मुहम्मद रहमान खाँ की पुत्री और अब्दुर्रहमान खाँ चुगताई की नवासी थीं, जो मुहल्ला ताजगंज मलिकों की गली की रहने वाली थीं। नजीर को सन्तान के रूप में एक पुत्र गुलजार अली 'असीर' और एक पुत्री इमामी बेगम प्राप्त हुए। नजीर का वंश–वृक्ष पुत्री पक्ष से पल्लवित हुआ। इमामी बेगम की पुत्री विलयती बेगम थीं जिनके माध्यम से प्रो. शहबाज़ ने नज़ीर संबंधी अनेक तथ्य ग्रहण किए। नज़ीर ने अध्यापन को जीविका का माध्यम बनाया। जब वे आगरा आए तो मात्र 17 रु. प्रति माह पारिश्रमिक के रूप में अध्ययापन कार्य आरम्भ किया। साहित्य के क्षेत्र में नज़ीर की शिष्य परम्परा लम्बे समय तक नहीं चल सकी।

नजीर का वास्तविक नाम वली मुहम्मद और उपनाम 'नज़ीर' अकबराबादी था। उनके पिता का नाम मुहम्मद फारुक् था जो व्यवसाय से सैनिक थे। नज़ीर का जन्म सन् 1735 ई. में देहली में हुआ और पालन–पोषण से जीवन की अंतिम श्वाँस तक वे आगरा में रहे। उनकी पत्नी तहव्वरुन्निसा बेगम थीं जिनसे एक पुत्र गुलज़ार अली 'असीर' और एक पुत्री इमामी बेगम ने जन्म लिया। नज़ीर की मृत्यु 1830 ई. में हुई।

नजीर का इंतकाल 95 वर्ष की उम्र में 16 अगस्त, 1830 ई. मुताबिक 1246 हि. को हुआ। इस बात पर तो सब को इत्तिफाक है कि नजीर ने तवील उम्र पाई। उन की उम्र का अन्दाजा उनके इस बंद से भी होता है।

सांस्कृतिक संदर्भों को दृष्टि में रखकर यदि नज़ीर की रचनाओं पर विचार–विमर्श किया जाए तो व्यक्तिगत जीवन से लेकर धार्मिक–सामाजिक, दार्शनिक आदि सभी संदर्भ उनके काव्य में नक्षत्रों के समान जगमगाते दिखाई देते हैं।

'जन्म-कन्हैया जी' नामक कविता में नज़ीर ने बालक का जन्म होने पर

भारतीय संस्कृति में प्रचलित समस्त संस्कारों के साथ-साथ नामकरण, नारियों के गाने-बजाने, मिठाई बाँटने, घुट्टी बनाने, विभिन्न प्रकार के नाच रंग एवं क्रिया-कलापों का वर्णन किया है। बालक के जन्म पर कुछ संस्कारो का वर्णन करते हुए नज़ीर कहते हैं कि-

सब नारी आईं गोकुल की, और पास पड़ोसिन आ बैठीं।
कुछ ढोल-मजीरा लाती थीं, कुछ गीत जचा के गाती थीं।।
कुछ हर दम मुख इस बालक का, बलिहारी होकर देख रहीं।
कुछ थाल पंजीरी के रखतीं, कुछ सोंठ-सठौरा करती थीं।।
कुछ कहती थीं-हम बैठे हैं, नेग आज के दिन का लेने को।
कुछ कहती-हम तो आए हैं, आनन्द बधावा देने को।

संस्कृति के विभिन्न तत्वों रक्षाबन्धन, होली, दीवाली, ईद, ईदुलफित्र मेलों एवं खेल-तमाशों आदि पर आधारित नज़ीर की लगभग पचास (50) रचनाएँ यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि उन्होंने भारतीय समन्वयामक संस्कृति को किस सीमा तक स्वीकार किया। उन्होंने जुआ, कुश्ती, गतका, तैराकी, पतंगबाजी, बल्देव जी का मेला, स्याम सगाई, आदि रचनाओ के माध्यम से मनोविनोद परक संस्कारों को प्रस्तुत किया।

नज़ीर के सांस्कृतिक संदर्भों की अर्थवत्ता जिन दो तत्वों से सिद्ध होती है उनमें पहला सांस्कृतिक समन्वय और दूसरा युगीन संस्कारों का ज्ञान है। विश्व स्तर पर विभाजन एवं खण्डन को समन्वित एवं संयोजित करने में जिस नीति-रीति की आवश्यकता है वह नज़ीर के काव्यका अभिन्न अंग है। इसकी अर्थवत्ता नज़ीर के निर्माणकारी दृष्टिकोण की स्वीकृति और ध्वंस अथवा खण्डन के विचारों से विमुख होने में पुष्ट होती है। अन्य संस्कार भारतीय संस्कृति का परिचय प्रदान करने के लिए आवश्यक है।

नज़ीर अकबराबादी के काल में हिन्दू, इस्लाम, जैन, बौद्ध, सिख, पारसी, ईसाई आदि विभिन्न धर्मावलम्बी भारत में निवास कर रहे थे। इनमें हिन्दू धर्मावलम्बी बहुसंख्यक थे। इस काल का हिन्दू धर्म मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन का क्षीण रूप था। वह अनेक वैष्णव, शैव और निर्गुण सम्प्रदायों में बंटा हुआ था।

हिन्दू त्यौहारों में होली का अपना विशेष महत्व है। जन-जन से जुड़ा यह त्यौहार अपना उदाहरण आप है। सम्पूर्ण विश्व में इसकी उपमा किसी पर्व से नहीं दी जा सकती। होली रंगों, तरंगों और प्रेम का त्यौहार है। भाँग और मदिरापान की बुराई आज भी होली के अवसर पर दिखाई देती है। नज़ीर के युग में भी यह बुराइयाँ विद्यमान थीं। यथा-

मारा है निपट होली के रंगो ने अजब जोश।
जो रग में इक ख़ल्क बनी फिरती है गुलपोश।

है नाच कहीं, राग कहीं, रग कहीं जोश।
पीते है नशे ऐश में सब लोटे हैं मदहोश।
माज़ू कहीं पीते हैं कहीं भंग (2) ज़मी पर।
होली ने मचाया है अजब रग ज़मीं पर।

दर्शन और आस्था को दृष्टि में रखकर व्यक्ति इन सिद्धान्तों को भी अपनाता है। जीवन संबंधी विभिन नियम और जीव-जगत् और परम सत्ता के प्रति श्रद्धात्मक समर्पण धर्म के प्रति आस्था एवं विश्वास को प्रकट करते हैं।

क्या हिन्दू, क्या मुसलमाँ, क्या रिंदो गबरो काफिर।
नक़्क़ाश क्या मुसव्विर, क्या खुश नवीस शायिर।
जितने, 'नज़ीर' हैं याँ, एक दम के हैं मुसाफिर।
रहना नहीं किसी को, चलना है सबको आख़िर।
दो चार दिन की ख़ातिर, याँ घर हुआ तो फिर क्या?
टुक हिर्सोहवा को छोड़ मियाँ, मत देस-विदेस फिरे मारा।
कज़्ज़ाक अजल का लूटे है, दिन रात बजाकर नक्क़ारा।
क्या बधिया, भैंसा, बैल, शुतर क्या गोनें, पल्ला, सर भारा।
क्या गेहूँ, चावल, मोठ, मटर क्या आग, धुआँ और अँगारा।
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा, जब लाद चलेगा बंजारा।

धार्मिक भावनाओं को मान्यता प्रदान कर वह अनेक बाह्याडमबरों का आश्रय लेता है ताकि समाज में दूसरों की तुलना में भिन्न रहे और मान-सम्मान प्राप्त कर सके। नज़ीर ने विभिन्न बाह्याडम्बरों का वर्णन करते हुए इस दुनिया को धोखे की ट्टटी (मायावी) बताया है। यथा-

कोई बाल बढ़ाए फिरता है, कोई सर को घोट मुँडाता है।
कोई कपड़े रंगे पहने है, कोई नंगे-मुंगे आता है।
कोई पूजा कथा बखाने है, कोई छापा तिलक लगाता है।
जब देखा खूब तो आख़िर को, सब छोड़ अकेला जाता है।
गुल, शोर, बबूला, आग, हवा और कीचड़ पानी मट्टी है।
हम देख चुके इस दुनिया को, यह धोखे की-सी ट्टटी है।

राखी के त्योहार को देखकर तो उनका हृदय प्रेम प्लावित हो उठता है। वे ब्राह्मण बनकर अपने प्रिय-पात्र के हाथ में प्रेम की राखी बाँधना चाहते हैं-

मची है हर तरफ क्या-क्या सलूनों की बहार अब तो।
हरेक गुलरू फिरै है राखी बाँधे हाथ में खुश हो।
हविस जो दिल में गुजरे है कहूँ क्या आह। मैं तुमको।

यही आता है जी में बनके ब्राह्मण आज तो यारों।
मैं अपने हाथ से, प्यारे के बांधूँ प्यार की राखी।।

मियाँ नजीन को सर्वाधिक प्रसन्न होली के त्यौहार पर होती है। होली को वे राष्ट्रीय त्यौहार मानते हैं।

हिन्द के गुलशन में जब आती है होली की बहार।
जाँ फिसानी चाही कर जाती है होली की बहार।।

और-

जब आई होली रंग भरी सौ ताजो अदा से मटक-मटक।
और घूंघट के पट खोल दिए वह रूप दिखाया चमक-चमक।।
कुछ मुखड़े करते दमक-दमक, कुछ अवरक्त करते झलक-झलक।
मरदंगें बाजें ताल भरें, कुछ खनक-खनक कुछ धनक-धनक।।

नजीर ने हिन्दुओं के सर्व प्रथम पूजित देवता गणेश की स्तुति का मनोरम व सारगर्भित विवेचन किया है-

अव्वल तो दिल में कीजिए पूजन गनेश जी।
स्तुति भी फिर बखानिए धन-धन गनेश जी।
भक्तों को अपने देते हैं दर्शन गनेश जी।
वरदान बख्शते हैं जो देवन गनेश जी।
हर आन ध्यान कीजिए सुमिरन गनेश जी।
देवेंगे रिद्धि सिद्धि औ अन-धन गनेश जी।।

नज़ीर ब्रज क्षेत्र में होने के कारण कृष्ण पर अधिक अनुरक्त हैं। उन्होंने कृष्ण भक्ति ने विभिन्न विषयों पर लिखा है-

वही सब में रहे हरि आप हरि हर से नियारा है।
वही है देख लो प्रत्यक्ष जग उसका पसारा है।।

कृष्ण के विभिन्न रूपो का प्रतीकात्मक वर्णन नजीर की शैली की विशेषता है-

सिफ्तो सना में सृष्टि रचैया की क्या लिखूं।
औसाफी खूबी ब्रज के बसैया की क्या लिखूं।
पदायश अब में कुल के करैया की क्या लिखूं।
कुछ मदह में उस सुध के लिवैया की क्या लिखूं।
तारीफ कही कृष्ण कन्हैया की क्या लिखूं।

नज़ीर ने गुरुनानक जैसे भक्त अवतारी की भी अभ्यर्थना भाव विभोर होकर की है जो उनकी समन्वयात्मक सोच का उदाहरण है-

हैं कहते नानक शाह जिन्हें वह पूरे हैं आगाह गुरू।

वह कामिल रहबर जग में है यूँ रौशन जैसे माह गुरू।
मक्सूद मुराद, उम्मीद सभी, बर लाते हैं दिलख्वाह गुरु।
नित तुल्फो करम से करते हें हम लोगों का निरवाह गुरू।
नज़ीर ने शक्ति उपासकों में माँ दुर्गा की भक्ति में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है-
मन बास न कहिये क्यों कर जी है काशी नगरी बरसन की।
है तीरथ ज्ञानी ध्यानी का हर पंडित और धुन सरसन की।।
जो बसने हारे दूर के हैं यह भूमि है उन मन तरसन की।
उस देवी देवनी नटखट के है चाह चरन के परसन की।।

हिन्दू त्यौहार

नज़ीर ने हिन्दुओं के त्यौहारों पर विस्तार से सूक्ष्म विवेचन किया है। वह चाहे होली हो या मेला हो, उनकी लेखनी बहुआयामी दृष्टि से रेन, अबीर, मजाक, व्यंग इत्यादि का मन भवन विवेचन करती है। होली नजीर का पसंदीदा त्योहार मालूम होता है। सिर्फ होली पर अलग-अलग अंदाज से उन्होंने दस-नज्में लिखी हैं। दीवाली, बसंत और राखी पर भी नजीर की कई नज्में मौजूद हैं। नजीर होली, दीवाली या बसंत और राखी को हिन्दुवाना त्योहार नहीं बल्कि हिन्दुस्तानी त्योहार मानते हैं और हिन्दुस्तानी तहजीब किसी एक खास फिरके से ताल्लुक नहीं रखती बल्कि हिन्दुस्तान के तमाम अवाम इसकी नुमाइंदगी करती है।

होली के अवसर पर आगरा में मिठाई के खोमचे, मोठ की दाल, मुंह में पान, लोगो की मनभावन गलियों का भी नज़ीर ने विवरण दिया है-

सनम तू हमसे न हो बदगुमान होली में।
कि यार रखते हैं यारों का मान होली में।।
यह अपनी छोड़ दे अब ज़िद की आन होली में।

उपर्युक्त जनसामान्य से पृथक नज़ीर ने फकीरों की होली का भी जिक्र किया है जिसमें सुफियाना अन्दाज झलकता है। यह परम अपात्मा में मिलन की होली है। प्रभु में रंग मे ंएकाकार हो जाना ही फकीरों की होली है। चिश्ती सम्प्रदायों में इसी राग रंग की होली आज भी खेली जाती है। यह प्रभु मिलन का प्रतीक है।

उनकी होली तो है निराली जो है मांग भरी।
साथ फिरती है कई रंग भरी राग भरी।
अपनी होली तो उसी यार की है राग भरी।
जिसके दरवाजे पर बैठी हैं कई फाग भरी।
आह के शोले हैं और सीने में है आग भरी।
हम फकीरों की सदा होली है बैराग भरी।।

सारत: उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहना समीचीन होगा कि नज़ीर अकबराबादी ने हिन्दू धर्म के त्यौहारों, मेलों का विस्तार से वर्णन करते हुए एक धार्मिक सद्भाव का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंनें ठेठ ब्रजभाषा का प्रयोग करते हुए प्रचलित उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया है जो उनकी लोक भावना का परिचायक है। अत: नज़ीर ने लोक में प्रचलित विभिन्न त्यौहारों में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं एवं कुकर्मों की ओर संकेत करते हुए यह दर्शाया है कि युगीन समाज में इन अवसरों पर कौन–कौन सी बुराइया व्याप्त थीं। उन्होंने अगर होली में भाँग और मदिरा का वर्णन किया तो दिवाली के अवसर पर जुए की कुप्रथा को भी उद्घाटित किया। हकिकत यह है कि नजीर अकबराबादी की शायरी इंसानी अकदार की शायरी है, हिन्दुस्तानी समाज की झलक है। नजीर हिन्दुस्तान की मिट्टी में पैदा हुआ, उसे मिट्टी में परवरिश पाई, और उसी में दफन हो गया, वह हिन्दुस्तान का शायर था औरउसकी शायरी को पढ़ना होगा।

❑❑❑